Received: Jul '22
Revised:
Accepted: Aug '22

© 2022 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

CONTRIBUTION OF DR. INDRADEV BHOLA INDRANATH TO OVERSEAS HINDI CHILDREN'S LITERATURE

प्रवासी हिंदी बाल साहित्य को डॉ. इंद्रदेव भोला इन्द्रनाथ की देन

Mr. Surender Kumar[1] and Dr. Sheshlata Yadav[2]
[1]Research Scholar, Department of Hindi, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India
[2]Assistant Professor, Department of Hindi, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India
E-mail: [1]suren.kashyap29812@gmail.com

बालक राष्ट्र की अमूल्य थाती है। बालक ही राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं अतः संपूर्ण विश्व में बाल साहित्य के माध्यम से बाल पीढ़ी को संस्कारवान करने का प्रयास रहता है। संपूर्ण विश्व में प्रौढ़ साहित्य के साथ-साथ यथासंभव बाल साहित्य की रचना भी होती है। बाल साहित्य के क्षेत्र में प्रवासी भारतीयों ने अपना यथासंभव योगदान दिया है। संसार भर में भारतीय मूल के लोग न्यूनाधिक संख्या में प्रवास करते हैं। फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस जैसे देशों में यह संख्या अधिक है। प्रवासी भारतीय अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में भी साहित्य सर्जन में अग्रगण्य है। मॉरीशस में प्रौढ़ हिंदी साहित्य का जितना सृजन हुआ है उतना सृजन हिंदी बाल साहित्य का नहीं हो पाया है, इसका कारण लेखकों द्वारा बाल साहित्य को गंभीरता से नहीं लेना है। "मॉरीशस में इतने दमदार साहित्यकारों के होते हुए भी बाल साहित्य का उतना विकास न होने पर का क्या कारण हो सकता है? कुछ साहित्यकार सोचते हैं कि बच्चों के लिए पुस्तकें लिखने से बच्चे ही तो पढ़ेंगे। आम पाठक तो नहीं पढ़ेंगे, सो वे व्यस्क स्तर की कविताएं, कहानियां, नाटक, उपन्यास आदि लिखने में व्यस्त हो जाते हैं। वास्तव में बाल साहित्य न लिखने का मुख्य कारण यह है कि बाल मनोविज्ञान आना चाहिए। अपने को बाल स्तर पर झुककर बच्चों की इच्छाएं, रुचियां, मनोवृति जाननी पड़ती हैं। बाल स्तर के पाठ, बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां, लोरियां, प्रार्थनाएं लिखना सचमुच जटिल कार्य है।"[1] यह सत्य ही है कि बाल मनोविज्ञान की समझ के बिना बाल साहित्य की रचना का साहस करना भी अकल्पनीय है। इसी संदर्भ में डॉ सुरेंद्र विक्रम और जवाहर इंदु लिखते हैं कि "बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"[2] आज की तेज रफ्तार जिंदगी में बालक का जीवन स्वरूप भी बदला है इसलिए उस बालक को केंद्र में रखकर लिखा जाने वाला बाल साहित्य भी परिवर्तन चाहता है। "आज बाल साहित्य में जिस सैद्धान्तिक आधार भूमि की बात कही जा रही है वह उसी बाल मनोविज्ञान पर अवलम्बित है जो बालक के विकास तथा बदलते हुए परिवेश में सामन्जस्य स्थापित करने में उसके लिए सहायक होता है। बाल साहित्य के शास्त्रीय विधान न केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, बल्कि साहित्य रचना की दृष्टि से भी बड़ों के साहित्य शास्त्रीय विधानों से बिल्कुल अलग हो जाते हैं। बाल अनुभूति की सरल और गेय शब्दों में छन्दबद्ध अभिव्यक्ति ही बाल गीत है। कहानियाँ सुनकर बच्चे कुछ सीखते हैं, नए-नए सपने देखते हैं। उनके सामने सारा संसार होता है, उनके मानसिक क्षितिज का विस्तार होता है और उनकी रूचि गहरी होती है।"[3] इन महत्त्वपूर्ण कथनों के आलोक में मॉरीशस के बाल साहित्य की गति मंद होने के कारणों का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। इन कथनों का निष्कर्ष यह नहीं है कि मॉरीशस के साहित्यकारों में बाल मनोविज्ञान की समझ नहीं है, बल्कि इसका निचोड़ यह है कि यहां के लेखकों ने कभी अपनी लेखनी को बाल साहित्य की दिशा में ले जाने की सुस्ती दिखाई है।

मॉरीशस में प्रारंभिक बाल साहित्य का रूप दादी-नानी की कहानियों में मिलता है। इसके बाद भारत से बाल साहित्य की कुछ पुस्तकें मॉरीशस पहुंची जो बाल साहित्य के प्रथम पायदान के रूप में स्थापित हुई और मॉरीशस में 'बालसखा', 'रिमझिम', 'मुक्ता' और 'सुमन' जैसी पत्रिकाओं की नींव पड़ी। बाल पत्रिकाओं की शुरुआत के बाद भी मॉरीशस में बाल पुस्तकों के प्रकाशन की गति अत्यंत मंद थी। बाल कहानियों की प्रथम पुस्तक 'व्यवहार प्रकाश' शीर्षक से प्रोफेसर वासुदेव विष्णु दयाल द्वारा 1976 में रची गई। 1978 में ला फ़ोतेन द्वारा अनूदित कहानी संग्रह 'परिकथा 'नाम से प्रकाशित हुआ। 1981 में 'मॉरीशस की बाल हिंदी कहानियां' नामक संकलन प्रोफेसर कामता कमलेश के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ। इसी क्रम में प्रह्लाद राम शरण द्वारा 1995 और 1998 में क्रमशः 'बोने का वरदान' तथा 'मॉरीशस की लोक कथाएं' शीर्षक से दो पुस्तकें प्रकाशित करवाई गई। मॉरीशस में हिंदी के उत्थान के लिए स्थापित हिंदी लेखक संघ द्वारा 'बालसखा' नामक पत्रिका का प्रकाशन तथा 1999 में 'मॉरीशस की मनोहर बाल कहानियां' शीर्षक संग्रह प्रकाशित करवाया गया। हिंदी लेखक संघ द्वारा वर्ष 2009 में 'मॉरीशस का बाल नाटक संग्रह' का प्रकाशन कराया गया। बाल साहित्य के विकास और अभिवृद्धि के लिए मॉरीशस में किए गए उक्त प्रकाशन के बाद भी बाल साहित्य के क्षेत्र में यह प्रयास पर्याप्त नहीं थे।

मॉरीशस में हिंदी साहित्य के क्षितिज पर अपने मध्यम प्रकाश में टिमटिमाते बाल साहित्य रूपी नक्षत्र को प्रकाशवान करने के लिए डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ रूपी भानु का उदय हुआ। मॉरीशस में हिंदी बाल साहित्य के विकास के लिए प्रयासरत रहे अनेक साहित्यकारों में डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। कवि, लेखक, कहानीकार, संपादक, निबंधकार और नाटककार के रूप में विख्यात डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ सशक्त बाल साहित्यकार भी हैं। बाल साहित्य की सभी विधाओं में आपने प्रचूर साहित्य सृजन किया है। मॉरीशस के हिंदी लेखक संघ द्वारा 1994 में प्रकाशित पुस्तक 'मॉरीशस की मनोहर बाल कहानियाँ' का संपादन कर मॉरीशस के

बाल साहित्य के लिए अद्वितीय कार्य किया है। इस कथा संग्रह में कुल 17 कहानियां संकलित हैं। सन् 2009 में लेखक संघ द्वारा ही प्रकाशित पुस्तक 'मॉरीशस के बाल नाटक संग्रह' का कुशल संपादन कर हिंदी बाल साहित्य को नवीन दिशा प्रदान करने का सफल प्रयास भी डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने किया।

वर्ष 2011 में डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ कि बाल मनोविज्ञान पर आधारित शिक्षाप्रद कहानियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह प्रकाशित हुआ, जिसमें 25 बाल कहानियां संकलित हैं। इस संग्रह की प्रमुख कहानियाँ 'रेशमा की तितली', 'मोटराम और भूखी लड़की', 'क्यों रूठी है बिटिया रानी', 'मित्रता का हाथ' आदि है। 102 बाल कविताओं और गीतों से युक्त 'बच्चे कितने अच्छे' नामक बाल कविता संग्रह वर्ष 2011 में प्रकाशित हुआ। इंद्रदेव भोला का बाल साहित्य बहुआयामी है। युग-चेतना इसकी प्रमुख विशेषता है। मनोरंजन के साथ संस्कार, माता-पिता और गुरु का सम्मान, ईश्वर में आस्था देशभक्ति की भावना से भोला जी का बाल साहित्य ओतप्रोत है।

"बाल साहित्य की भाषा सरल और कोमल होनी चाहिए तभी बालक उसे समझ सकेंगे तथा बाल साहित्य के माध्यम से ही बालकों का भाषा ज्ञान भी विकसित होता है तो बाल साहित्य के लेखक को इसका भी ध्यान रखना होता है। शब्द संयोजन, शब्दों की आवृत्ति, लय एवं कोमल ध्वनि बालकों को प्रभावित करती हैं।"[4] डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ बाल साहित्य उक्त सभी विशेषताओं से युक्त है। भाषा पर इनकी गहरी पकड़ है। डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ कि बाल साहित्य की भाषा सर्वथा बाल मन के अनुकूल है। अपनी बाल कविताओं में ये स्वयं बालक ही नजर आते हैं। बाल मनोविज्ञान पर गहरी पकड़ रखने वाले डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ बालमन को पढ़ने में सफल और बाल साहित्य कैसे सिद्धहस्त कलाकार हैं। देश के लिए बालकों को तैयार करने वाली राष्ट्रीयता से ओतप्रोत उनकी कविता बालकों में अत्यंत लोकप्रिय है-

"देश भक्त हैं तो देश के लिए जीए
पीना पड़े तो देश के लिए ज़हर भी पी लें
प्रण करें हाथ कटे पर झंडा न झुके।"[5]

भारतीय संस्कृति में माता पिता ईश्वर तुल्य माने गए हैं। उनका सम्मान करना साक्षात ईश्वर का सम्मान करना स्वीकार किया गया है-

"मेरे माता-पिता मेरे भगवान हैं
चरणों में मैं उनके शीश झुकाता हूँ
आशीष मैं उनकी पाता हूँ
गुरुजी न होते तो हम अशिक्षित रह जाते
सत्य-असत्य को न पहचानते।"[6]

डॉ इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ के बाल साहित्य का महत्त्व इस बात से भी समझा जा सकता है कि उनके बाल काव्यसंग्रह 'बच्चे कितने अच्छे' पर एक शोध प्रबंध लिखा गया है। इनके 'हाइकु' महाकाव्य है पर भी शोध कार्य जारी है। डॉ. लालदेव अंचराज ने लिखा है "श्री इन्द्रनाथ अपनी प्रारंभिक साहित्यिक यात्रा से ही बाल- साहित्य का सृजन करते आ रहे हैं। बाल साहित्य में इन्द्रदेव का योगदान सराहनीय ही नहीं बल्कि इस दिशा में अग्रणी लेखन कार्य भी किया है।" डां. श्याम त्रिपाठी ने लिखा "आपने अपने देश में हिंदी का एक इतिहास रचा है। आज विश्व की हिंदी के क्षेत्र में बाल-साहित्य का अभाव है। न जाने बालकों के प्रति ऐसी उदासीनता क्यों? आपके द्वारा संपादित, प्रकाशित 'बाल सखा' एक ज्ञानोदय के समान है।" इस प्रकार प्रवासी हिंदी बाल साहित्य में डॉ इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ का विशिष्ट स्थान है। प्रवासी हिंदी बाल साहित्य के विकास में उनके योगदान को चिरकाल तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। हिंदी बाल साहित्य को मॉरीशस की धरती पर स्थापित करने के लिए जो प्रयास डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने किया है वह सदैव उनकी अक्षय कीर्ति का आधार बना रहेगा।

संदर्भ सूची

1. पंकज, यंतुदेव बुधु (प्र. सं.) हिंदी प्रचारिणी सभा, लोंग माउंटेन मॉरीशस, अंक 54, अगस्त 2018, पृष्ठ 05
2. संपादक राष्ट्र बंधु, बाल साहित्य समीक्षा, मई 1988, बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, पृष्ठ-06
3. हरिकृष्ण देवसरे,0हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन , आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1969, पृष्ठ-235
4. डॉ. कुमारी उर्वशी, बालकों के विकास में बाल साहित्य का योगदान https://www.apnimaati.com/2021/07/blog-post_86.html?m=1
5. पंकज, यंतुदेव बुधु (प्र. सं.) हिंदी प्रचारिणी सभा, लोंग माउंटेन मॉरीशस, अंक 54, अगस्त 2018, पृष्ठ 07
6. वही पृ. 07